क्रिसमस - नाताल

मनुष्य अपने जीवन में रोज़मर्रा के चक्करों से मुक्ति पाने के लिए प्रयत्न करता रहता है, उन अनेक प्रयत्नों में से एक प्रयत्न त्यौहार है। ये त्यौहार अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय, राजकीय, ऐतिहासिक, धार्मिक, सांप्रदायिक, सामाजिक किसी भी स्तर के हो सकते हैं। हमारे देश में त्यौहारों की इतनी भरमार है कि हमारी विविधता में एकता और एकता में विविधता वाले देश में छुट्टियों का बोलबाला रहता है और कार्यालयीन कार्यों में घपलेबाजी चलती रहती है। वैसे यह घपलेबाजी त्यौहारों के आयोजनों में भी दृष्टव्य होती है। कभी ईद, कभी दीवाली, कभी चतुर्थी, कभी दुर्गापूजा, कभी नवरात्रि, कभी क्रिसमस, कार्निवाल या ईस्टर। जितने भी त्यौहार आज कल हम मनाते है उन सब के इतिहासों के बारे में पता करें तो वाकई दिलचस्प बातें ध्यान में आती हैं। चतुर्थी मनाने की शुरुआत को विस्तृत मंच लोकमान्य तिलक ने दिया। क्या आज चतुर्थी के आयोजन में वह बात सही है? किसी भी त्यौहार का आयोजन आज लाऊड स्पीकरों का आयोजन बनकर रह गया है। विविध सप्रदायों ने अपने अपने संप्रदाय की तूती बजाने के लिए अपने अपने लाऊडस्पीकरों का आयोजन करके आवाजों का प्रदूषण ही फैलाया है। इसमें मनुष्य या मनुष्यता का आयोजन दृष्टव्य नहीं होता। पूरी - पूरी रात हमारे लाऊडस्पीकरों के माने गए मनोरंजन सही मायनों में मनोरंजन की बजाय मन रंज से भर जाता है।

जन्म राम का हो या कृष्ण का, मूसा का हो या मुहम्मद का, ईसा का हो या यहींवा का। उनके आने का मकसद तो मनुष्य ही था। जो मनुष्य के लिए आता है उसका धर्म मनुष्यता के अलावा कुछ हो ही नहीं सकता।

हमारे अलग अलग संप्रदाय हमें सांप्रदायिक बनाकर उलझाते हैं। धर्म हमें धारण करने की क्षमता देता है। मनुष्य अपनी अपनी धारण क्षमतानुसार उसे धारण करता है। क्या उसे मंदिर, मस्जिद, गिरजा, चैत्य, उपाश्रय, गुरुद्वारे में बांटना जरूरी है? क्या उससे चित्तशुद्धि हो सकती है? आईए, इस भागदौड़ और उपभोक्तावादी जीवन में क्षणभर रुके और इतिहास का आधार लेकर कुछ सोचें। इस महीने की पच्चीस तारीख को जो त्यौहार आ रहा है जिसे क्रिसमस के नाम से हम मनाते हैं, उसके बारे में कुछ सोचें...

"Christmas which is known as `Noel' in France, Weinachten" in Germany, Natale in Italy and Noche Byena in spain, is associated...

क्रिसमस को हम नाताल नाम से भी जानते है। नाताल और नेटिविटी दोनों शब्दों का अर्थ जन्मदिवस ही है। उसे पच्चीस दिसंबर को ही क्यों मनाते हैं? क्या ईसा मसीह इसी दिन पैदा हुए थे?

रोमन इतिहास कहता है कि सबसे पहले तीसरी शताब्दी के अंत में इसे मनाया गया था। जैसे जैसे रोमन साम्राज्य में क्रिश्चियानिटी का प्रचार प्रसार होने लगा था उसके साथ इसका महत्त्व भी बढ़ने लगा था। रोमन त्यौहार जो 25 दिसंबर को मनाया जाता था उसका नाम था "the Birth of the unconquered sun." Sun - God की बजाय क्रिश्चियन लोग क्राईस्ट Christ की पूजा करने लगे और उनका आना पूरे विश्व के लिए प्रकाशमय माना गया।

.."The exact date of the Nativity is not easily ascertainable as Christiandom did not begin to date its years from the birth of Christ until 550 A. D. (Anno Domini)

कहते हैं Pope Julius I (337-352) ने जन्मोत्सव मनाने के लिए पच्चीस दिसंबर को चुना था। आज तक हम उसी मध्यरात्रि को पवित्र बालक के जन्म के रूप में मनाते हैं। चर्च में उस रहस्य को इन शब्दों में जाहिर किया जाता है -

This is the day on which Christ was born. On this day the Saviour appeared. To-day on earth the angels sing and archangels exult, while good men rejoice and say, "Glory to God in the heavens."

प्रारंभ के दिनो में पादरी तीन प्रार्थना सभाओं को संबोधित करते थे। कैथोलिक लोगों को तीनों सभाओं (Mass) में जाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था पर एक सभा में जाना आवश्यक माना गया था। इसके पीछे भी इतिहास कहता है कि 24 दिसंबर की रात को बारह बजे हिंदू कॅलेन्डर के हिसाब से और ग्रेगोरियन कॅलेन्डर में रात को बारह बजे दिन बदलता है वह 25 दिसंबर बन जाता है। जेरूसलेम के क्रिश्चियन लोग 24 की मध्यरात्रि Church of Nativity अर्थात बॅथलेहॅम में जाकर प्रार्थना करते थे, वापस जेरुसलेम में 25 की प्रातःकाल पहुंचकर प्रार्थना करत थे और तीसरी बार सुबह को प्रार्थना करते थे। इसी प्रथा को रोमन लोगों ने अपनाया था।

नाताल - क्रिसमस पर लेख हो और उसमें क्रिसमस पापा का उल्लेख न हो यह कैसे हो सकता है? इसे सांताक्लॉज भी कहा जाता है। जर्मन भाषा का एक शब्द है - "Krist Kringle" जिसका अर्थ होता है, बच्चों के लिए उपहार लाने वाला। यह शब्द भी "Krist Kindl" का अपभ्रंश रूप है । सांता क्लोसी का आधार St. Nicholas के नाम पर आधारित माना जाता है। (ज्यादातर डच भाषा का शब्द माना जाता है) ये संत मायरा (जगह का नाम है) में चौथी शताब्दी में बिशप Bishop थे जो उदारतापूर्वक लोगों में उपहार बांटते थे। वे ही अब बच्चों के लिए दान का प्रतीक बन गए हैं।

मिसल्टो (एक प्रकार की हमेशा हरीभरी रहनेवाली बेल है) जिसके पत्ते बड़े और पीले फूल होते हैं तथा उस पर मोम के जैसी सफेद Berries एक प्रकार का फल होता हैं। इसे प्यार और शांति का प्रतीक माना जाता है। आज भी चर्च में "Kiss of Peace" पवित्र बालक का चुंबन लिया जाता है उसका मूल मिसल्टो में माना जाता है।

क्रिसमस तब भी मनती थी, क्रिसमस आज भी हम मनाते हैं और सालों साल मनाते भी रहेंगे पर क्या उसका मूल तत्त्व हम आत्मसात कर पाए हैं?

उस समय क्रिसमस था और आज क्रिसमस पार्टीज और क्रिसमस ट्री हैं। सब कुछ है पर वह पुरानी क्रिसमस नहीं है। भेंट, सौगातें हैं पर सिर्फ अपनों के लिए ही। क्रिसमस पापा की तरह सब बच्चों के लिए उपहार हम न भी दे पाएं पर क्या एक अंधेरे घर में हम नन्हा उम्मीद का दीया जला नहीं सकते? सिर्फ अपनों तक ही क्रिसमस को रखने की बजाय यह पर्व सब के साथ मिलकर मानवीय रूप में क्यों नहीं मनाते? आज के आयोजन में कम्पीटिशन ही कम्पीटिशन है... स्टार, क्रिब, खेल - कूद, निबंध प्रतियोगिता सब से सुंदर स्टार हो उसे इनाम, जिसने क्रिसमस क्रिब सब से सुंदर बनाया उसे इनाम ... सब से सुंदर या अच्छा क्या होता है? हर व्यक्ति का स्टार सुंदर है क्योंकि उसमें उसका प्रयास छुपा है, पवित्र बालक की याद छुपी है, उसके संदेश का विश्वास छिपा है वहां बाह्य आडंबर का क्या काम है? हमारे घर के दरवाजे आज भी सिर्फ अपनों के लिए ही सोचते हैं बेगानों के लिए अपने लोग कब सोचेंगे? आज भी ऐसे बच्चे हैं जो गटर में जन्म लेते हैं, कचरों पर पलते हैं और कचरा बीनकर जीवन गुजारते हैं। क्या हमारी दीवाली, चतुर्थी, ईद, पोंगल, क्रिसमस उनके बारे में सोचती है?

हर त्यौहार मनुष्य अपने अपने देश में तब भी मनाता था आज भी मनाता ही है। 'तब' और 'आज' में सालों का अंतर आ गया है, जीवन बदला है, जीवन के प्रति रवैया बदला है, दृष्टिकोण बदले हैं। ये बदलाव स्वाभाविक भी हैं। पर हम मनुष्य मनुष्यता के संदेश को उस समय भी भूल गए थे, आज भी भूल गए हैं और अगर आज इस पर नहीं सोचेंगे तो आनेवाले कल में भी मनुष्यता के संस्कार भूले ही रहेंगे। व्यापार, जीवन साथ साथ चलने चाहिएँ। न तो व्यापार ही जीवन है, न जीवन ही व्यापार है। इस भूमंडलीकरण के प्रवाह में मनुष्य कहां जा रहा है? इसे जानना मनुष्य के लिए जरूरी हो गया है। हमारी राह हमें कहां लिए जा रही है? हमारे अंदर का वह गवर्नर जो रोमन साम्राज्य में पोन्टियस पायलट (Pontitus Pilate) के नाम से जाना जाता था वह पायलट - पिलात आज भी हमारे अंदर बैठा अपने हाथ धो रहा है... अपनी जिम्मेदारी से भाग रहा है... आज भी मनुष्य जाति के लिए मनुष्य ही अभिशाप बना हुआ है। जुल्म ढाए जा रहा है... कविता में जैसे विएतनाम और मंगोलिया हैं वहां आज पूर्व तिमोर, चेचनिया, कोसोवो, कारगिल नाम लिए जा रहें हैं... जो सवाल कवि ज्योर्ज मिनेझिस अपने काव्य में उठाते हैं वे आज भी विद्यमान हैं।

कम - से - कम इस सहस्राब्दी के अंत में हम सब मिलकर गाएं -

शांत रात्रि की शांति में कुछ सोचें, पवित्र रात्रि में कुछ टटोलें... सब कुछ नीरव है, प्रकाशमय है... उसे शोर शराबे में न गंवाएं... पूरे विश्व के घर घर में शांति, पवित्र, नीरव और प्रकाश पर्व की क्रिसमस मनाएं। सांप्रदायिक गुरुओं की बजाय हम परमपिता परमात्मा के शब्दों को याद करें... उसे जीवन में उतारें... सभी धर्मों में ईश्वर का निवास स्वयं व्यक्ति के अंदर माना है। गौतम बुध्द ने कहा हैं प्रत्येक मनुष्य अपने अंदर बुध्द या बोधिसत्व बनने की शक्ति रखता हैं। प्रभु ईसा कहते हैं 'स्वर्ग का राज्य सबके अंदर है।' हज़रत मुहम्मद कहते हैं 'जिसने अपने आपको पहचान लिया, उसने अपने रब को पहचान लिया ।" हमारे अंदर का ब्रह्म, बोधिसत्व, स्वर्ग का राज्य, रब इन सब को अपने भीतर टटोलें। क्रिसमस पर्व पर जब रात को बारह बजे हम पवित्र पुस्तक के वचनों को दोहरायेंगे तब उनको आत्मसात करने का प्रयत्न करें। हम गिरजों को सजाएं जरूर पर मन रूपी गिरजे को भी अपने मानवीय व्यवहार से सजाएं, घर में गोशाला की पवित्रता लाएं, तोपों की सलामी में आनेवाली नई सदी का नया सवेरा सलाम करें, नक्षत्रों की रोशनी हमें अपने जीवन में राह सुझाए, मानवीय इतिहास का शुभारंभ करें। तीन ज्ञानी पुरुषों के साथ ड्रमर बॉय की भावना का भी स्वागत करें। थोडा है, थोडे की ज़रूरत है... जो है उसे बेहतर बनाने के लिए प्रयत्नशील हों तब हम सही मायनों में जिंदगी जी पाएंगे। हर मनुष्य को दूसरे मनुष्य के लिए जगह बनानी चाहिए। मायकल जैक्सन के "Heal The World" गीत में कहा गया है, इस विश्व को बेहतर बनाया जाए, तुम्हारे लिए , मेरे लिए और पूरी मनुष्य जाति के लिए...

We could fly so high, let our spirits never die

In my heart of feel you are all my brothers

Create a world with no fear together we'll cry,

Happy tears, see the nations turn,

Their swords into plough shares...

Make little space, to make a better place...

तलवार की बजाय हल का फाल महत्त्वपूर्ण है क्योंकि तलवार चलानेवाला भी तलवार से पेट नहीं भर सकता, पेट भरने के लिए तो अनाज ही चाहिए जो खेतों में ही

उगाया जाता है। धरती को सुंदर बनाने के लिए पक्षियों की तरह अपनी अपनी जुबां में प्रकृति का गीत गाएं, हवा की चादर पसारें, आकाश की विशालता में मानवता की संतानें मानवता का गान करें। पुराना नियम और, नया नियम ध्यान से पढ़ें तो दृष्टव्य होता है कि उस समय मानवता संदेश ही उसने सुनाया था। पुराने नियमों को छोड़ना और नए को अपनाना ही है पर जैसे शिव का तांडव - नृत्य प्रलय लाता है पर उसमें भी शिव तत्त्व बचे रहते हैं, अशिव तत्त्वों का ही नाश होता है वैसे ही पवित्र पुस्तक में भी कहा गया है।

"यह न समझो कि मैं व्यवस्था और नबियों के लिखों का लोप करने आया हूं। मैं उनका लोप करने नहीं पर पूर्ण करने आया हूं।"

रामकृष्ण परमहंस के उपदेशों में भी मसीहा को स्वीकारा गया है और वहां भी क्रिसमस पर्व मनाया जाता है।

स्वामी प्रज्ञानंद का कहना था कि क्राईस्ट के जन्म दिवस के बारे में चाहे मतभेद हों, 25 दिसंबर या और कोई भी तारीख हो हमें उस प्रभु के पुत्र के अभय वचनों पर विश्वास करना चाहिए जो हमें परमशांति और प्रकाश देगा।

कहने का मतलब है कि क्रिसमस का पर्व हम कौनसे दिन मनाते हैं यह उतना महत्त्वपूर्ण नहीं है पर उस मानवता के दिन का पवित्र संदेश ज्यादा महत्त्वपूर्ण है और उनका आना तय है, पर वह संपूर्ण मानवजाति का प्रकाश है और प्रकाश पूरे विश्व का, ब्रह्मांड का होता है किसी एक संप्रदाय का या एक व्यक्ति का नहीं हो सकता। सूर्य प्रकाश, हवा, आकाश, धरती परमात्मा की देन है उस पर हम सब आत्माओं का समान अधिकार है। वे किसी एक की बपौती नहीं हो सकते, न ही हैं। 'यदा यदा ही धर्मस्य' का संभवामि युगे युगे का अभय और क्राईस्ट का अभय एक ही मकसद लिए हुएहै 'वह हमारी तरह बनकर आता है तो हम उसकी तरह बन सकें...'

'वह हम से प्यार करता है और चाहता है कि हम जो कुछ भी बन सकते हैं वहे बनने का प्रयत्न करें।' नर ते नारायण, नारी ते नारायणी की संभावनाएं मनुष्य में ही मौजूद हैं जिसे मनुष्य को प्राप्त करना है।

"The world is waiting for a child. White, Black, Yellow, none knows, but for the Mankind the "Saviour" is coming.

"परित्राणाय साधूनां विनाशायच दुष्कृताम्"

मानवीय धर्म की स्थापना ही क्रिसमस का प्रकाशमय पवित्र संदेश है। महात्मा गांधी ने भी 'हरिजन पत्रिका' में 14 मई सन 1948 में लिखा था - मुसलमानों का 'अल्लाह' वही है जो ईसाईयों का 'प्रभु' और हिंदुओं का 'ईश्वर' है। जैसे ईश्वर के अनेक नाम हैं वैसे अल्लाह और प्रभु के भी हैं।' सभी संप्रदायों का आंतरिक मूल्य एक ही है। थोड़ा बहुत अंतर जो दिखता है उसका कारण उन परिस्थितियों में छिपा होता है, जिसमें वह संप्रदाय पनपता है। यदि उन परिस्थितियों को और देशकाल को सभी संप्रदायों से सटाकर देखें तो उसमें आश्चर्यजनक समानता नज़र आयेगी। आज की इस पवित्र बेला में अपना मिथ्या अहम् छोड़कर नम्रता से उसके सामने मस्तिष्क झुकाएं, अपने अंतर्मन में झांके, चित्त शुद्धि करें तो हमें मानवता की राह प्रकाशमय होती मिलेगी जो हम सब की मंजिल है। रास्ते अलग पर गंतव्य स्थान एक हैं। हम मनुष्य उसे पूर्ण रूप से न भी पाएं पर उस 'ड्रमर बॉय' की तरह अपना सब कुछ उसके लिए अर्पित करें। कृष्ण, क्राईस्ट, अल्लाह, नानक, हमारे गुरु कोई भी हो पर सब आज की शांत रात्रि में Colonial Cousins की तरह उस मसीहा को बुलाएं।

"प्रभु आप आएं... चाहे कृष्ण बनकर आएं, चाहे राम बनकर, या क्राइस्ट बनकर आएं। किसी भी रूप में आप आएं आपका नाम कोई भी हो पर आपके कार्य में अंतर नहीं है। मानवीय धर्म संस्थापनार्थ हर युग में आने का आपने वादा किया है। हम सब आपके इंतज़ार में हैं। उस मानवता के मसीहा को हम सब का शत शत नमन। पूरी प्रकृति की दौलत का उपयोग मनुष्य जाति की आनेवाली नस्लों के लिए बचाकर रखा जाए... भविष्य की संतानों के लिए आज के मां - बाप कुछ सोचें... पवित्र बालक का पवित्र संदेश हमारा जीवन प्रकाशमय कर दे... खुशियां जरूर मनाएं पर उसे कलुषित न होने दें। बुद्धिवालों को पवित्र बालक सद्‌बुद्धि दें। "थोड़ा है थोड़े की जरूरत है...।

'शुभम् भवतु' - सर्वे भद्राणि पश्यन्तु', इस लेख की सफलता के लिए मुझे फादर प्रताप नायक एवं फादर मैथ्यू अल्मेडा और 'गोवा टुडे' की सुश्री डिसौजा ने बहुत मदद की, इसिलए मैं उनकी आभारी हूँ।

- डॉ. चन्द्रलेखा डी सौझा